अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 1, अंक 2, अक्टूबर - दिसंबर 2023

भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण: प्रेमचंद की कहानियों के सन्दर्भ में

कट्टा विष्णुवर्धन रेड्डी

स्कूल सहायक, जिला परिषद उच्च पाठशाला अंडवेल्ली, जोगुलंबा गदवाल जिला, तेलंगाणा

भूमिका

हिन्दी कथा-साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। वे उस युग के लेखक थे, जब भारत सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में ग्रामीण भारत की पीड़ा, संघर्ष, शोषण, धार्मिक पाखंड, जातिगत भेदभाव और स्त्रियों की दयनीय दशा को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थ दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उन्होंने न केवल समाज के वंचित वर्ग को स्वर दिया, बल्कि कथा के माध्यम से पाठकों को सोचने पर भी विवश किया।

प्रेमचंद और भारतीय ग्रामीण समाज:
प्रेमचंद का अधिकांश लेखन ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित है। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है, और यदि वास्तविक भारत को जानना है, तो गांवों की ओर रुख करना होगा। उन्होंने किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, बालक और वृद्ध—सभी वर्गों की समस्याओं को केंद्र में रखते हुए कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियाँ केवल कथा नहीं हैं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज हैं जो एक यथार्थपरक समाज की तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

प्रेमचंद की दृष्टि में ग्रामीण समस्याएं:
प्रेमचंद ने किसान की आर्थिक दुर्दशा, साहूकारों के अत्याचार, जमींदारी प्रथा, अशिक्षा, अंधविश्वास, स्त्री शोषण और जातिगत भेदभाव जैसे मुद्दों को अपने साहित्य में उठाया। उनकी कहानियाँ केवल समस्या को दिखाती ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और नैतिकताओं को भी उजागर करती हैं।

'पंच परमेश्वर' में लोकतांत्रिक चेतना:
इस कहानी में प्रेमचंद ने भारतीय ग्रामीण समाज में विद्यमान पंचायत प्रणाली को एक आदर्श रूप में चित्रित किया है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता उस समय कठिन परीक्षा में पड़ती है, जब अलगू को पंच बनकर न्याय करना होता है। यह कहानी यह सिखाती है कि जब व्यक्ति 'पंच' बनता है, तो उसमें एक देवतुल्य चेतना का संचार होता है, और वह पक्षपात नहीं कर सकता। कहानी ग्रामीण समाज में नैतिकता और न्याय की अवधारणा को मजबूती से प्रस्तुत करती है।

'ईदगाह' में बाल मनोविज्ञान और आत्मबलिदान:
यह कहानी प्रेमचंद की संवेदनशीलता और बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ का प्रमाण है। हमीद अपनी दादी के लिए खिलौनों की बजाय चिमटा खरीदता है, जिससे वह रोटी बनाते समय जलने से बच सकें। यह त्याग, ममता और प्रेम का ऐसा उदाहरण है जो पाठकों को भावविभोर कर देता है। कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्चा प्रेम अपनी इच्छाओं की बलि देकर दूसरे की भलाई में सुख अनुभव करना है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 1, अंक 2, अक्टूबर - दिसंबर 2023

'कफन' में गरीबी और अमानवीयता का प्रश्न: '
कफन' प्रेमचंद की सबसे विवादास्पद और चर्चित कहानियों में से एक है। इसमें घीसू और माधव की अमानवीयता केवल उनकी नैतिक पतन का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह प्रश्न भी उठाती है कि क्या लगातार भूख, गरीबी और सामाजिक उपेक्षा ने उन्हें इतना कठोर बना दिया है कि वे पत्नी/बहू के मृत्यु पर भी संवेदनशून्य हो गए? प्रेमचंद ने यहाँ समाज की उस असंवेदनशील व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है, जो वंचितों को न तो जीवन जीने योग्य अवसर देती है, न मृत्यु में मर्यादा।

'सद्गति' में धर्म का विडंबनात्मक स्वरूप:
इस कहानी में प्रेमचंद ने ब्राह्मणवादी पाखंड और जातिवादी मानसिकता पर तीखा प्रहार किया है। दुखी नामक दलित व्यक्ति जब अपने मृत्यु संस्कार के लिए ब्राह्मण को बुलाने जाता है, तो वह उसके श्रम का शोषण करता है और अंततः वह वहीं मर जाता है। यह कहानी दिखाती है कि धर्म का तथाकथित ठेकेदार किस तरह पीड़ितों को मानवीय गरिमा से वंचित करता है।

'दो बैलों की कथा' में प्रतीकात्मकता:
इस कहानी में हीरा और मोती नामक बैलों के माध्यम से प्रेमचंद ने शोषण, आत्मबलिदान और विद्रोह की कथा कही है। यह बैल केवल पशु नहीं, बल्कि प्रतीक हैं उस मेहनतकश वर्ग के जो अत्याचार सहकर भी विद्रोह करने का साहस जुटाते हैं। यह कहानी भारतीय कृषक जीवन की गहराइयों तक जाती है।

नारी की स्थिति और संघर्ष:
प्रेमचंद के कथा-साहित्य में स्त्रियों का चित्रण अत्यंत सजीव, यथार्थपूर्ण और संवेदनशील है। वे ग्रामीण स्त्रियों की मानसिकता, परिश्रम, त्याग, संघर्ष और आत्मसम्मान को बड़े ही मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। 'बड़े घर की बेटी' में अन्नपूर्णा जैसी स्त्री का संयम, बुद्धिमत्ता और परिवार को जोड़ने की कला दिखाई देती है।

भाषा और शैली:
प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और जनमानस के निकट है। उन्होंने अवधी, ब्रज और खड़ी बोली के लोक-प्रचलित शब्दों को अपनाया जिससे कहानियाँ अधिक स्वाभाविक और जीवंत बन गईं। वे शैली में यथार्थ, व्यंग्य, करुणा और नैतिकता का अद्भुत समन्वय करते हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन का पूर्ण प्रतिबिंब है। उन्होंने अपने युग की जटिलताओं, संघर्षों और मूल्यों को बड़ी ही प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया। उनकी कहानियाँ न केवल साहित्यिक आनंद देती हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा भी प्रदान करती हैं। आज जब हम ग्रामीण भारत को आधुनिकता की ओर बढ़ते हुए देख रहे हैं, तब भी प्रेमचंद का साहित्य प्रासंगिक बना हुआ है। उनका यथार्थ, करुणा और सुधारवादी दृष्टिकोण हमें आज भी दिशा देता है।

संदर्भ

[1]. प्रेमचंद. *मानसरवर* (खंड 1–8). राजपाल एंड संज, नई दिल्ली.
[2]. प्रेमचंद. *निर्मला.* सरस्वती प्रेस, वाराणसी.

[3]. प्रेमचंद. *गोदान.* साहित्य भवन, इलाहाबाद.
[4]. शुक्ल, रामचंद्र. *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नागरी प्रचारिणी सभा.
[5]. सिंह, नंदकिशोर. *प्रेमचंद और सामाजिक यथार्थ.* राजकमल प्रकाशन.
[6]. पाठक, नामवर. *कथा की कहानी.* वाणी प्रकाशन.
[7]. सिंह, विश्वनाथ. *प्रेमचंद का कथा-संसार.* भारतीय ज्ञानपीठ.
[8]. त्रिपाठी, अशोक. *हिन्दी कहानी में ग्रामीण जीवन.* साहित्य अकादमी.
[9]. शर्मा, रामविलास. *प्रेमचंद और भारतीय समाज.* लोकभारती.
[10]. मेहता, मोहनलाल. *प्रेमचंद की कथाओं का सामाजिक मूल्यांकन.*
[11]. दुबे, सच्चिदानंद. *प्रेमचंद की कहानी कला.* साहित्य लोक.
[12]. शुक्ल, अशोक कुमार. *हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थवाद.*
[13]. पांडे, रवीन्द्र. *कहानी और समाज.* वाणी प्रकाशन.
[14]. दत्ता, अमलेन्दु. *कथाकार प्रेमचंद.* साहित्य निकेतन.
[15]. पांडेय, रमाशंकर. *प्रेमचंद का सामाजिक दृष्टिकोण.*
[16]. उप्रेती, विजयबहादुर. *प्रेमचंद और ग्रामीण यथार्थ.*
[17]. मिश्रा, गिरिराजशरण. *गोदान का समाजशास्त्रीय अध्ययन.*
[18]. चौधरी, रामकुमार. *प्रेमचंद की कहानियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण.*
[19]. त्रिवेदी, हरिकृष्ण. *प्रेमचंद का भारतीय दृष्टिकोण.*
[20]. यादव, हरिशंकर. *हिन्दी कहानी में दलित विमर्श.*